1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण अनिवार्य

महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन कृपया पंजीकरण हेतु लॉगइन करें–

www.aryamahasammenan.com

पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किए गए हैं।

वर्ष 48, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 11 अगस्त, 2025 से रविवार 17 अगस्त, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

निरन्तर गतिशील हैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली हेतु निमन्त्रण बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा असम में कार्यकर्ता बैठकें सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा असम की बैठक में उपस्थित सर्वश्री महेन्द्र सिंह राजपूत, श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी, प्रभाकर शर्मा, विनय आर्य एवं विभिन्न क्षेत्रों से पधारे आर्यजन

बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत बैठक में उपस्थित सर्वश्री दीन दयाल गुप्त, उदय सरकार, योगेश शास्त्री, विनय आर्य एवं बंगाल के विभिन्न जिलों से पधारे आर्यजन

भारतीय स्वाधीनता का 79वां स्वतन्त्रता दिवस

पश्चिमी दिल्ली में आर्यसमाज ने निकाली तिरंगा यात्रा

आर्य समाज की रग-रग में बसी है-राष्ट्रभक्ति- धर्मपाल आर्य

भारत की आजादी के सूत्रधार थे महर्षि दयानंद - विनय आर्य

देशभक्तों का आंदोलनकारी संगठन है - आर्य समाज
- राकेश आर्य, महामन्त्री, वेद प्रचार मंडल

आर्य समाज द्वारा राष्ट्रीय पर्व मनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के मध्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा भारत राष्ट्र के 79वें स्वाधीनता दिवस पर 10 अगस्त 2025 को भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान कर्नल रमेश मदान, महामंत्री श्री राकेश आर्य, अन्य अधिकारी कार्यकर्त्ता डॉ मुकेश आर्य, आर्यवीर, वीरांगना दल के शिक्षक, अधिकारी, कार्यकर्ता, विभिन्न आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, कार्यकर्ता, सम्मानित सदस्य और भारी संख्या में आर्य नर, नारी, बच्चे, युवा सम्मिलित हुए। तिरंगा यात्रा की शोभा देखते ही बनती

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज 150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

11 अगस्त, 2025
से
17 अगस्त, 2025

देववाणी-संस्कृत

स्पृहणीय ऐश्वर्य प्रदान कर

वेद-स्वाध्याय

यद् वीळाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर।।

-ऋ॰ 8।45।41; साम॰ उ॰ 4।1।9; अथर्व॰ 20।43।2

ऋषिः-काण्वःत्रिशोक।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- **इन्द्र** = हे परमेश्वर! **यत्** = जो धन तूने **वीडौ** = दृढ, न दबनेवाले पुरुष में **यत् स्थिरे** = जो धन स्थिर रहनेवाले में **यत् पर्शाने** = और जो धन विचारशील पुरुष में **पराभृतम्** = रखा है **तत्** = वह **स्पार्हम्** = स्पृहणीय, चाहने योग्य **वसु** = धन **आभर** = प्राप्त करा।

विनय- हे परमेश्वर्यवाले इन्द्र! तुम्हारा नाना प्रकार का ऐश्वर्य इस प्रकार में भरा पड़ा है, परन्तु तुम्हारे इन ऐश्वर्यो में से जिस प्रकार के ऐश्वर्य की मुझे स्पृहा है, जिस प्रकार के ऐश्वर्य को मैं चाहता हूँ वह तो ऐसा है जो संसार के वीर दृढ़ (वीड्) पुरुषों में दिखाई देता है और जो सिरि विमर्शशील पुरुषों में रहता है। प्रायः लोग रूपये-पैसे को ऐश्वर्य समझते हैं, परन्तु वास्तव में वह ऐश्वर्य नहीं है। रूपये-पैसे तथा अन्य सम्पत्ति के पदार्थो का ऐश्वर्य होना या न होना मनुष्य पर आश्रित है, मनुष्य की शक्ति पर आश्रित है, अतः मनुष्य तथा मनुष्य का सामर्थ्य ही वास्तविक धन (ऐश्वर्य) है। गीता में जो 'अभय', सत्त्वसंशुद्धि' आदि सद्गणों को दिव्य सम्पत्ति कहा है, वही सच्ची सम्पद् है। शम, दम, तितिक्षा आदि छह गुण इसीलिए 'षट् सम्पत्ति' नाम से, जगत् में प्रसिद्ध हैं। हे इन्द्र! मुझे तो यह ही सच्ची सम्पदा चाहिए। संसार रुपये-पैसे के धनियों को देखकर मुझे उनकी-सी अवस्था के प्रति तनिक भी आकर्षण नहीं होता, परन्तु वीरों की वीरता, अदम्य उत्साह, तेज और दृढ़ता पर मैं मोहित हूँ। जो चिरकाल तक स्थिरता से, श्रद्धापूर्वक साधना करते हुए अन्त अवश्य विजयशील होते हैं, उनका यह स्थिरता का गुण मुझे उनका भक्त बना लेता है; और जब मैं उन पुरुषों को देखता हूँ जो विचारपूर्वक सब कार्य करते हैं, पेचीदा अवस्था आने पर भी जिन्हें अपने कर्त्तव्य का निर्णय करने में तनिक देर नहीं लगती, तो मैं यही चाहता हूँ कि यह विमर्श-क्षमता मुझमें भी आ जाए। जिनके पास ये तीन गुण नहीं होते उनके पास तो रुपया-पैसा भी नहीं ठहरता; यदि ठहरता भी है तो या तो वह शक्तिरूप नहीं होता या बुरी शक्ति बन जाता है। क्या हम प्रतिदिन नहीं देखते कि कायरता के कारण, अस्थिरता के कारण, ना समझ के कारण सब कमाया हुआ बड़ा भारी धन एक दिन में बरबाद हो जाता है या तो हुआ भी बेकार सिद्ध होता है। इसलिए मेरे पास तो यदि भूमि, घर आदि कुछ सामाना न हो, कपड़ा-लत्ता भी न हो, एक कौड़ी तक न हो, परन्तु यदि मुझमें वीरता, अजेय दृढ़ता हो और लगातार देर तक सतत काम करने की शक्ति एवं लगन हो तथा मुझमें विचारशीलता हो, तो मैं हे प्रभो! अपने को महाधनी समझूँगा और संसार में आत्माभिमान के साथ सिर ऊँचा करके फिरूँगा। इसलिए हे नाथ! मुझे तो तुम दृढ़ता, स्थिरता और विमर्शशीलता प्रदान करना; मैं यही माँगता हूँ, आपसे यह ऐश्वर्य पाना चाहता हूँ।

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

79वें स्वाधीनता दिवस की देशवासियों को बधाई

राष्ट्र की स्वाधीनता और स्वधर्म के प्रणेता थे - महर्षि दयानन्द सरस्वती

सन् 1885 में मि॰ ओ॰ ह्यूम ने राष्ट्रीय नेताओं की समस्याओं को प्रत्यक्ष रखकर कांग्रेस की स्थापना की, उससे 10 वर्ष पूर्व अर्थात् कि 1875 में आर्य समाज की स्थापना हुई थी। दोनों में बड़ा भारी वैचारिक फर्क था। कांग्रेस के स्थापना सदस्यों में अधिकांश सरकारी नौकरियों में सेवारत सुखवासी लोग थे, जो क्रान्तिकारी और स्वराज्य सम्बन्धी विचारों से कोसों दूर थे। वे तो सुविधा और सुव्यवस्था के लिए कांग्रेस की स्थापना के इच्छुक थे और स्थापना के बाद उसके सदस्य भी बने। आर्य समाज की स्थापना के पीछे सर्वांगीण परिवर्तन जिसमें समाज एवं राजकीय तथा धार्मिक सुधार की दृढ़ इच्छाशक्ति थी। आरंभिक दिनों में (कांग्रेस की स्थापना के समय) कांग्रेस अपनी मांगों एवं प्रस्तावों द्वारा अनेक प्रकार की सुविधाओं के लिए प्रयत्न कर रही थी, जिनकी ब्रिटिश सरकार ने हमेशा उपेक्षा की थी।

उधर क्रान्तिकारी नौजवान सन् 1857 से संघर्ष द्वारा अंग्रेजों को सत्ता से उखाड़ फेंकने का कार्य कर रहे थे। जिनमें नाना साहेब पेशवा, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे आदि सशस्त्र क्रान्ति के योद्धा थे। स्वामी दयानन्द के जीवन की घटनाओं का सन् 1855 से 1857 के वर्षों का कहीं वर्णन प्राप्त नहीं होता है। कई चरित्र लेखकों का मानना है कि उस समय साधुओं ने भी इस स्वाधीनता के प्रथम संग्राम में भाग लिया था जिसमें स्वामी जी का गुप्त रूप से सहभाग था।'

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि 33 वर्ष का शक्तिशाली नव तरुण संन्यासी इस संघर्ष से कैसे अलिप्त रह सकता है? दूसरा इस सम्बन्ध में यह प्रमाण बहुत ही सबल है कि जब सन् 1855 में स्वामी दयानन्द गुरु की खोज में स्वामी पूर्णनन्द से विद्या प्राप्ति हेतु कनखल उत्तराखण्ड पहुंचते हैं तब दयानन्द उनसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें शिष्य बना लीजिए। इस पर स्वामी पूर्णानन्द जी अति वृद्ध होने के कारण असमर्थता प्रकट करते हुए अपने शिष्य विरजानन्द जी का पता देते हैं, और उन्हें मथुरा जाने के लिए कहते हैं। स्वामी दयानन्द उनकी सलाह मानकर कनखल से सीधा मथुरा न जाकर वे कानपुर तथा नर्मदा के क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। इसी क्षेत्र में क्रान्तिकारियों के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध गदर की योजना बनाई जा रही थी। इस क्षेत्र और संघर्ष के लिए स्वामी पूर्णानन्द जी ने उन्हें कानपुर जाने की प्रेरणा न दी हो ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। मथुरा की बजाय दयानन्द कानपुर की तरफ निकलते हैं, यह कोई संयोग नहीं हो सकता अपितु योजनाबद्ध गुप्त कार्य ही हो सकता है।

विशेष यह कि साधु, संन्यासियों की यह गुप्त योजना हरिद्वार के कनखल में ही बन रही थी। कानपुर पहुंचने पर उनकी भेंट (प्रथम स्वाधीनता संग्राम) इस 'गदर' के योद्धा नाना साहेब पेशवा से होती है और साधु, संतों, फकीरों को संदेशवाहक बनाकर चारों दिशाओं में भेजा जाता है, उनके साथ अजीमुल्ला खां भी नाना साहेब के साथ इस विद्रोह की तारीख निश्चित करने में अग्रभागी रहते हैं। दयानन्द भी योजना के अनुसार बनारस, मिरजापुर, चुनार होकर नर्मदा के प्रवाह स्त्रोतों के लिए दक्षिण की ओर निकल पड़ते हैं। इसके पश्चात् स्वामी दयानन्द की आत्मकथा यकायक रुक जाती है, और तीन वर्षों का घटनाक्रम थम जाता है, इन तीन वर्षों का उल्लेख उनके स्वलिखित जीवन में भी नहीं मिलता। यह कोई संयोग न होकर पूर्व नियोजित योजना ही हो

स्वामी दयानन्द के जीवन की घटनाओं का सन् 1855 से 1857 के वर्षों का कहीं वर्णन प्राप्त नहीं होता है। कई चरित्र लेखकों का मानना है कि उस समय साधुओं ने भी इस स्वाधीनता के प्रथम संग्राम में भाग लिया था जिसमें स्वामी जी का गुप्त रूप से सहभाग था।' इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि 33 वर्ष का शक्तिशाली नव तरुण संन्यासी इस संघर्ष से कैसे अलिप्त रह सकता है? दूसरा इस सम्बन्ध में यह प्रमाण बहुत ही सबल है कि जब सन् 1855 में स्वामी दयानन्द गुरु की खोज में स्वामी पूर्णानन्द से विद्या प्राप्ति हेतु कनखल उत्तराखण्ड पहुंचते हैं तब दयानन्द उनसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें शिष्य बना लीजिए। इस पर स्वामी पूर्णानन्द जी अति वृद्ध होने के कारण असमर्थता प्रकट करते हुए अपने शिष्य विरजानन्द जी का पता देते हैं, और उन्हें मथुरा जाने के लिए कहते हैं। स्वामी दयानन्द उनकी सलाह मानकर कनखल से सीधा मथुरा न जाकर वे कानपुर तथा नर्मदा के क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। इसी क्षेत्र में क्रान्तिकारियों के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध गदर की योजना बनाई जा रही थी। इस क्षेत्र और संघर्ष के लिए स्वामी पूर्णानन्द जी ने उन्हें कानपुर जाने की प्रेरणा न दी हो ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। मथुरा की बजाय दयानन्द कानपुर की तरफ निकलते हैं, यह कोई संयोग नहीं हो सकता अपितु योजनाबद्ध गुप्त कार्य ही हो सकता है।........

सकती है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम विफल हो जाने के पश्चात् स्वामी जी गुरु विरजानन्द के यहां विद्याध्ययन के लिए पहुंचते हैं। नाना साहेब पेशवा स्वामी दयानन्द को अपना गुरु मानते थे। क्योंकि इसके पीछे की एक घटना बड़ी महत्त्वपूर्ण है। विद्रोह (प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम) असफल हो जाने के पश्चात् नाना साहेब पेशवा आत्महत्या करने वाले थे, स्वामी जी ने उन्हें आत्मीयता से समझाते हुए कहा था, कि आगे इससे भी बड़ा और सुनियोजित संग्राम हम सब मिलकर करेंगे, इससे आश्वस्त होकर नाना साहेब ने आत्महत्या का विचार छोड़ दिया था। उन्होंने नाना साहेब को धर्म प्रसार, स्वराज्य प्राप्ति और अवसर आने पर अंग्रेजों के साथ दूसरा युद्ध करने की इच्छा व्यक्त की थी तथा सम्प्रति संन्यासी बनकर जनजागृति करने का समुपदेश दिया था। नाना साहेब ने भी स्वामी जी की बात को शिरोधार्य कर संन्यास ग्रहण किया तथा दिव्यानन्द नाम धारण कर उत्तर भारत में धर्म जागृति हेतु कार्य करते रहे।

स्वामी दयानन्द जी के हृदय में बहुत समय से तीव्र इच्छा थी कि यदि राजस्थान के राजाओं में देशभक्ति और धर्म सुधार की ज्योति प्रज्वलित की जाय तो उनमें अंग्रेजों के खिलाफ जनमत के द्वारा उठाव हो सकता है। उन्होंने अनेक राजाओं और रियासतदानों से मिलकर इस बारे में चर्चा की और आर्यावर्त को किस तरह विदेशियों से मुक्त किया जा सकता है, इस विषय पर विचार-विमर्श किया। वे सन् 1881 से 1883 तक राजस्थान की वीरभूमि में रहे और सभी को सामाजिक और राजकीय परिवर्तन का संदेश देते रहे। जिन राजा-महाराजाओं के साथ उक्त विषय पर विशेष चर्चा की उनमें राव युधिष्ठिर सिंह रेवाड़ी हरियाणा, ठाकुर रणजीत सिंह अचरोल राजपुताना, ठाकुर नन्दकिशोर सिंह जयपुर, महाराजा सर नाहर सिंह साहपुरा राजस्थान, बारहठ कृष्णसिंह उदयपुर, राव बहादुर सिंह मसूदा अजमेर, राजस्थान, महाराजा कर्नल सर प्रताप सिंह जोधपुर, महाराणा सज्जन सिंह उदयपुर, राव राजा तेज सिंह वर्मा जोधपुर, महाराजा जसवन्त सिंह जोधपुर राजस्थान, महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ बदौदा, महाराणा फतह सिंह उदयपुर तथा

- शेष पृष्ठ 7 पर

युवा निर्माण एवं आर्यसमाज

- स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती
अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

गतांक से आगे -

युवा निर्माण तभी सम्भव है जब वे आर्य समाजों में आयें, इसके लिये निम्न उपाय करने होंगे।

1. प्रत्येक आर्य समाज का सदस्य अपने पुत्र, पौत्र को आर्य समाज के सत्संग में साथ लाये और यदि वे बड़े हैं तो उन्हें आर्य समाज का सदस्य बनायें।

2. आर्य समाजों में मन्त्री या उपमन्त्री युवा ही होना चाहिये।

3. मास के अन्तिम रविवार को साप्ताहिक सत्संग का आयोजन बच्चों और युवाओं के लिये ही होना चाहिये। अथवा उस दिन वे ही यजमान, संयोजक और वक्ता रहें।

4. सन्ध्या यज्ञ के अतिरिक्त मधुर गीत-संगीत, महापुरुषों के जीवन चरित्र, चरित्र निर्माण के प्रवचन, शिष्टाचार एवं बौद्धिक ज्ञान-विज्ञान के कार्यक्रम भी रखे जायें।

5. युवकों को आकर्षित करने के लिये आर्य समाजों द्वारा कुछ रचनात्मक कार्य जैसे ग्रीष्मऋतु में पानी की व्यवस्था, पर्वो एवं धार्मिक उत्सवों में सेवा एवं प्रबन्ध में सहयोग, चिकित्सा शिविर, कुरीति निवारण, अन्धविश्वास एवं स्थानीय समस्या को लेकर जन-जागरण आदि प्रारम्भ करने चाहियें। इससे युवक सहज ही आकर्षित होंगे। आर्य समाज ने हैदराबाद में सत्याग्रह किया और विजय प्राप्त की। आज भी दक्षिण भारत में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार उसी आन्दोलन के फल स्वरूप दिखाई दे रहा है। इसी भांति हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह में उत्तर भारत के आर्यों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया, जेलों में रहे और पक्के आर्य समाजी बनकर निकले।

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है। अज्ञान, अन्याय, अभाव के विरुद्ध उसका अभियान चलता ही रहना चाहिये।

6. विद्यार्थियों की परीक्षा के समय निर्धन, मेधावी युवकों के सेवा निवृत्त आर्य सज्जन अपने ज्ञान से उनका मार्ग दर्शन अथवा उस विषय के जानकार व्यक्ति से निशुल्क ट्यूशन पढ़ाया जाये। साथ ही उनमें आर्य समाज का साहित्य भी वितरित किया जाये।

7. आर्य-शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन एवं अन्य कार्यो में उन्हीं युवाओं को प्राथमिकता दें, जिन्हें सैद्धान्तिक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका हो।

8. साधन सम्पन्न समाजें निर्धन विद्यार्थियों के लिये कम्प्यूटर प्रशिक्षण, लड़कियों के लिये सिलाई, कला, कौशल का कोर्स चला सकती हैं। मास में एक बार उनका साप्ताहिक सत्संग में आना अनिवार्य कर दिया जाये अथवा साप्ताहिक सत्संग में आना अनिवार्य कर दिया जाये अथवा उनका सत्संग पृथक भी किया जा सकता है।

9. आर्य समाज के उत्सवों एवं पर्वो के अवसर पर युवाओं एवं बच्चों की क्रीड़ा स्पर्धा व्याख्यान प्रतियोगिता, वाद-विवाद एवं सैद्धांतिक परीक्षा प्रान्तीय सभाओं द्वारा प्रारम्भ करनी चाहिये। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने यह अभियान चलाया हुआ है।

10. प्रायः देखा जाता है कि सम्पन्न परिवारों के बच्चों की रुचि धार्मिक कार्यो में नहीं होती। इसके लिये पिछड़े वर्ग के बच्चों की प्रोत्साहित कर उन्हें आर्य समाज के साथ जोड़ने का प्रयत्न करना चाहिये। आर्यवीर दल दिल्ली तथा आर्यवीर दल सोनीपत (हरियाणा) का इस दिशा में स्तुत्य प्रयास है। माता-पिता एवं विद्यालयों में अच्छे संस्कार न दिये जाने के कारण तथा इण्टरनेट द्वारा पश्चिम की अपसंस्कृति को देखकर आज का युवा भटक गया है। मूर्ति पूजा, धर्म गुरुओं की विलासिता युवाओं को नास्तिक बना दिया है। इसमें युवाओं की सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण वे भारतीय संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। परश्रिम करने के पश्चात योग्यता होने पर भी जब सिफारिश से अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति होते देख उसके मन में निराशा, कुण्ठा और विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में मनोविज्ञान के जानने वाले विद्धज्जनों द्वारा उनका मार्ग दर्शन करना अपेक्षित है। रोजगार न मिलने से युवा वर्ग तनाव ग्रस्त होता जा रहा है परिणाम स्वरूप उसक धार्म और सामाजिक मान्यताओं से भी विश्वास उठ गया है। हमें इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुय उनका मार्गदर्शन करना होगा जिससे उनका आत्मविश्वास पुनः लौट सके। योगसन-प्राणायाम, ध्यान का अभ्यास इस कार्य में सहायक सिद्ध होगा। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना आर्य समाज का छठा नियम इसी ओर संकेत कर रहा है।

सब से अन्त एक बात सबको हृदयगंम कर लेनी चाहिये कि जो गुण हम युवाओं में देखना चाहते हैं वे हमारे जीवन में भी होने चाहियें। हमारी कथनी और करनी में कोई अन्तर न आने पाये। पहले किसी ग्राम या नगर के मौहल्ले में एक भी आर्य समाजी होता था उसकी अपनों पहचान थी। आर्य समाज की 150वीं जयन्ती के अवसर पर हमें गम्भीरता से आर्य समाजों में युवकों को लाने के लिये योजनाबद्ध होकर कार्य करने की आवश्यकता है आज का आर्यवीर ही कल आर्य समाज का नेतृत्व सम्भालेगा। नये रक्त का आगमन रुकना नहीं चाहिये तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्देश्य पूरा होगा।

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का प्रादुर्भाव

गतांक से आगे -

कुल मिलाकर हम अपने मूल वैभवकाल और गौरवशाली परम्पराओं से बहुत दूर जा चुके थे और इससे भी बदतर थी उस समय की परिस्थितियां, जब महर्षि दयानन्द सरस्वती का इस भारत भूमि पर आगमन हुआ।

आओ उस महान् व्यक्तित्व के एक संक्षिप्त से जीवन को भी जान लें तभी हम उनके कार्यों को और गहराई से जान सकेंगे। प्रस्तुत जीवनी अत्यन्त संक्षिप्त एवं सारभाव ही है- पूरी जीवनी को पढ़ने के लिये 8447200200 पर मिस कॉल करके आप महर्षि की पूरी जीवनी पढ़ सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

जिस महान् आत्मा ने हमें अन्धकार से निकालकर प्रकाश का मार्ग दिखलाया, स्वयं विष पीकर वेदामृत हमें पिलाया, जिसने सोते हुए को जगाया, आओ जानें अद्भुत मृत्यु-अद्भुत जीवन। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 12 फरवरी 1824 को टंकारा गुजरात में एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ। आरंभिक संस्कृत का पठन-पाठन घर में हुआ, शैव मत के मानने वाले परिवार में नाम मूल नक्षत्र में पैदा होने कारण मूल शंकर रखा गया। पैतृक संस्कारों के अनुसार शिक्षा-दीक्षा हुई। 19 वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि के अवसर पर व्रत रखने की बात आई तो श्रद्धा से व्रत रखा, पर मन्दिर का सारा दृश्य देखकर मन अशान्त हो गया। कुछ चूहों को शिवलिंग पर चढ़ाए गए प्रसाद को खाते देखकर, मन में यह विचार पैदा हुए कि ये वास्तविक कैलाशपति नहीं है जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता। बस चिन्तन सच्चे शिव की खोज के लिए आतुर हो उठा। घर और जिम्मेदारी बाधा लगने लगी। बहन और चाचा की मृत्यु को देखकर मृत्यु की सच्चाई को जानने की इच्छा और प्रबल हो उठी। बस ये विचार रूपी आंधी घर की चार दिवारी को तोड़कर संसार सागर के विचरण को निकल पड़ी। मानो मूल शंकर- शंकर के मूल को खोजने निकल पड़ा। सारे देश को देखा, समाज को देखा, धर्म को देखा, धर्म के नाम पर पाखण्ड को देखा, धार्मिक अंधविश्वासों को अनुभव किया।

पहले शुद्ध चैतन्य बने, ब्रह्मचर्य धारण किया, ज्ञान प्राप्ति में व्यवधान समझ सीधा संन्यास लिया, नाम रक्खा- 'दयानन्द', मानो आने वाले जीवन का उद्देश्य आज ही तय कर लिया हो।

कहां उत्तराखण्ड की बर्फीली चोटियां, कहां नर्मदा का उद्गम स्थल, पैदल ही नापा। जनता के दुःख-दर्द, धार्मिक पुस्तकों की सत्यता-असत्यता, आश्रमों की सच्चाई को और गहराई से देखा। हरिद्वार कुम्भ में भी आसन जमाया। हजारों साधुओं को, उनके अखाड़ों की लीलाओं को देखा, जो जान सकते थे जाना, जो सीख सकते थे सीखा, अन्ततः मथुरा में गुरु विरजानन्द के द्वार पहुंचे, जो चाहते थे, सो मिल गया-जैसे चांद को चकोर। आर्ष परम्परा अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान वेद की वास्तविक ज्ञान परम्परा पाई सन्देह के बादल मिट गए, ज्ञान पाया-निहाल हो गए। अब गुरु दक्षिणा की बारी थी, गुरु दक्षिणा में लेकर तो लौंग गए थे, किन्तु सारा जीवन ईश्वरीय ज्ञान वेद विद्या के प्रचार के लिए समर्पित करने का संकल्प ही दे डाला और निभाया भी। जो ज्ञान लिया था-अब बारी थी उसे देने की, अभी तक ज्ञान प्राप्ति के लिए भारत भर का भ्रमण किया था, अब ज्ञान देने के लिए भ्रमण आरम्भ किया। सीमित साधनों में असीमित यात्राएं की। फिर से हरिद्वार के कुम्भ में पहुंचे, पाखण्ड खण्डिनी

पताका फहराकर पाखण्ड के गढ़ में जाकर सीधी चुनौती दी।

ज्ञान की नगरी 'काशी' में अज्ञान को चुनौती दी, अभिमन्यु की तरह घेरे गए, पर वे तो अर्जुन निकले। न डरे, न सहमे, न विचलित हुए, अविचल से टिके रहे, सत्य का आधार जो था। हार-जीत एक तरफ, सत्य का डंका तो बज चुका था। दयानन्द की बात तो पत्थर की लकीर बन चुकी थी, अब पीटने मात्र से क्या होता ?

- क्रमशः

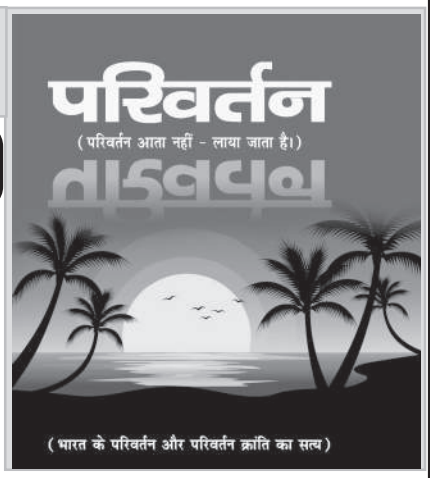

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगिन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

चलो दिल्ली! वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ चलो दिल्ली!

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

30 अक्तूबर से 2 नवम्बर,2025 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै०-10, रोहिणी, दिल्ली-110085

मुख्य पंडाल : विश्वभर से पधारे विद्वानों, कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं आमंत्रित अतिथियों द्वारा राष्ट्र व विश्व के समक्ष वर्तमान समस्याओं के वैदिक समाधान तथा आर्य समाज के विश्वव्यापी संगठन के सेवा कार्यों की जानकारी। साथ ही आर्य समाज के नए युग के भव्य स्वरूप का प्रस्तुतिकरण।

अनुषंगी हॉल : मुख्य पंडाल के अतिरिक्त अनेक अलग-अलग हॉल में विभिन्न आयु/भाषा/रुचि वाले आगंतुकों हेतु अलग-अलग विषयों पर विशेष व्याख्यान, चर्चाएं, शंका समाधान, चलचित्र आदि के कार्यक्रम चलते रहेंगे।

आर्य प्रकाशक हॉल : वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य प्रकाशित करने वाले विश्वभर के आर्य प्रकाशकों का यहां विराट संगम होगा, जिसमें एक लेखक मंच भी होगा जहां नए-नए लेखक एवं प्रकाशक अपनी कृतियों का परिचय देंगे।

मूवी हॉल: यहां विचार टीवी एवं आर्यसन्देश टीवी की ओर से 100 से अधिक फिल्मों का प्रसारण किया जाएगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम हॉल: आर्य समाज के इतिहास की सत्य घटनाओं का रोमांचक नाटिकाओं के माध्यम से प्रदर्शन।

विभिन्न भाषा हॉल : विश्व भर से पधारे विद्वानों द्वारा उनकी स्थानीय भाषाओं में प्रवचन।

भजनोपदेश हॉल : विश्व भर से पधारे भजनोपदेशकों द्वारा पूर्णकालिक भजन प्रस्तुति ।

गुरुकुल हॉल : आर्ष गुरुकुलों की परम्परा एवं संस्कृति प्रदर्शित करते पूर्णकालिक हॉल।

शंका समाधान हॉल : सुयोग्य विद्वानों द्वारा आगंतुकों की शंका का समाधान करने हेतु पूर्णकालिक हॉल।

प्रतियोगिताएं : गुरुकुलों एवं आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु पूर्णकालिक प्रतियोगिता हॉल।

विश्व आर्य समाज हॉल : विभिन्न देशों से पधारे आर्यजनों द्वारा उनके देशों में चल रही आर्य समाज की गतिविधियों को जानने का स्वर्णिम अवसर।

पर्यावरण एवं यज्ञ विज्ञान हॉल: पर्यावरण एवं यज्ञ के परस्पर वैज्ञानिक सम्बन्ध को दर्शाने हेतु विशेष हॉल।

गौशाला : एक आदर्श वैदिक परम्परा के नगर की संकल्पना जिसमें दुधारु गऊओं की गौशाला होगी।

यज्ञशाला : भव्य, सुन्दर, आदर्श शिल्प का नमूना, जिसे देखकर मन रोमांच से भर जाए।

लघु गुरुकुल : प्राचीन काल के गुरुकुल के सुन्दर दृश्य की जीवंत झांकी।

पूर्णकालिक यज्ञ : मुख्य यज्ञशाला के अतिरिक्त एक ऐसी यज्ञशाला भी होगी जहां निरन्तर यज्ञ होता रहेगा। आगन्तुक जब चाहें तब जाकर अपने परिवार एवं मित्रों के साथ यज्ञ कर सकते हैं। महासम्मेलन की वेबसाइट पर अपनी सुविधानुसार समय पर स्थान आरक्षित करवाएं।

ध्यान-योग : प्रतिदिन प्रात: खुले मैदान में योग साधना, प्राणायाम एवं ध्यान की क्रियाओं का प्रशिक्षण। इसके उपरान्त ध्यान एवं योग साधना कक्षों में समय-समय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा चर्चाएं एवं साधनाएं।

सामूहिक यज्ञ प्रदर्शन : इस बार विशेष रूप से विश्व इतिहास में पहली बार 25 हजार बच्चों, युवाओं एवं आर्यजनों द्वारा एक साथ सामूहिक रूप से एक रूपीय यज्ञ प्रदर्शन कार्यक्रम करने का प्रयास होगा।

आर्य वीर दल शाखा: प्रतिदिन प्रात:काल आर्य समाज की युवाशक्ति का नयनाभिराम दर्शन।

भव्य व्यायाम कला प्रदर्शन: देश के विभिन्न राज्यों से आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के चयनित आर्य वीर एवं आर्य वीरांगनाओं द्वारा अद्भुत, अदम्य साहस से परिपूर्ण कलाओं का प्रदर्शन। व्यायाम, भाला, तलवारबाजी, लाठी, नानचक, जुडो, कराटे, आत्मरक्षा तकनीकों आदि का प्रदर्शन।

नुक्कड़ नाटक : समसामयिक विषयों को पर समाज में जागरूकता लाने हेतु खुले मंच पर नुक्कड़ नाटकों का मंचन।

अन्धविश्वास निवारण हॉल: योग्य जादूगर द्वारा चमत्कारों का भंडाफोड़।

व्यवस्थाएं-सुविधाएं एवं मुख्य आकर्षण

विश्वमार्यम हॉल : सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आर्य समाज की कार्य एवं गतिविधियों की जानकारी देने हेतु विशेष हॉल।

वैवाहिक परिचय सम्मेलन : इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में एक दिन समस्त आर्यजगत के आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। आप भी अपने परिवार के विवाह योग्य युवक-युवतियों का पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए www.matrimony.thearyasamaj.org पर लॉगइन करें।

प्रदर्शनी: आर्यसमाज के इतिहास एवं सिद्धान्तों, संगठन, कर्तव्यों, घटनाओं का प्रदर्शन चित्र दीर्घा के माध्यम से होगा।

लेजर शो : महासम्मेलन के एक दिन सायंकाल के समय महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती, 150 वर्षों के आर्यसमाज के इतिहास, वर्तमान, भविष्य की संकल्पना लिए एक अद्भुत प्रेरक कार्यक्रम जो चमकेगा सितारों के बीच एकदम आकाशवाणी की तरह।

सुन्दर सजावट : पूरे महासम्मेलन स्थल के विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की यादगार रखने लायक सजावट की जाएगी।

विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों का प्रदर्शन : महासम्मेलन के अवसर पर विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे आर्य कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासतों का प्रदर्शन।

साहित्य बाजार : विश्वभर के वैदिक साहित्य के प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य तथा प्रचार सामग्री के क्रय की सुविधा रहेगी। पुस्तकों पर 10 प्रतिशत की छूट अनिवार्य की जाएगी।

रिकार्डिंग स्टूडियो: विश्व के कोने कोने से पधारे विद्वानों, भजनोपदेशकों एवं कार्यक्रम की विडियो रिकॉर्ड करने के लिए महासम्मेलन स्थल पर ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग स्टूडियो की व्यवस्था रहेगी।

भव्य स्मारिका : एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा जिसमें सुन्दर, प्रेरणाप्रद लेख, कविताएं एवं रचनाओं के साथ-साथ विभिन्न आर्य संस्थाओं, सहयोगी संगठनों, शुभचिन्तकों के आशीर्वाद, शुभकामना सन्देश भी प्रकाशित किए जाएंगे। यदि आप अपने परिवार जनों, प्रियजनों की स्मृति में सन्देश प्रकाशित कराना चाहें तो करा सकते हैं। अपेक्षित शुल्क राशि देय होगी।

सुविधाएँ एवं व्यवस्थाएँ

पंजीकरण : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारने वाले समस्त आर्यजनों को महासम्मेलन में व्यवस्था एवं सुरक्षा की दृष्टि से पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। महासम्मेलन स्थल के मुख्य द्वार पर ही प्रत्येक आगंतुक को प्रवेश/पहचान पत्र जारी किया जाएगा। वेबसाइट पर अग्रिम पंजीकरण करवाकर आने वाले आगंतुकों को प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण हो जाएगी।

आवास : पधारने वाले समस्त आर्यजनों के आवास की नि:शुल्क व्यवस्था प्रान्त के अनुसार धर्मशालाओं, विद्यालयों, आर्य समाजों एवं महासम्मेलन स्थल पर बनाए गए टैंटों के विभिन्न ब्लॉकों में होगी। होटल एवं महासम्मेलन स्थल पर सशुल्क आवास में ठहरने की सुविधा महासम्मेलन से पूर्व अग्रिम राशि जमा कराने पर उपलब्ध होगी। इस सुविधा हेतु फार्म महासम्मेलन की वैबसाइट www.aryamahasammelan.com पर उपलब्ध है। विभिन्न होटलों की वेबसाइट पर जाकर होटल ऑनलाइन बुक किए जा सकते हैं।

भोजन : महासम्मेलन स्थल पर 29 अक्तूबर से 3 नवम्बर तक चौबीसों घण्टे भोजन की व्यवस्था रहेगी।

परिवहन : दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों तथा बस अड्डों से महासम्मेलन स्थल पर पहुँचाने तथा महासम्मेलन के अन्तिम दिन महासम्मेलन स्थल पर रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला, बस अड्डा- कश्मीरी गेट, आनन्द विहार, सराय काले खां आदि स्थानों के लिए नि:शुल्क व्यवस्था होगी।

दिल्ली भ्रमण:-महासम्मेलन के अन्तिम दिन तथा उससे अगले दिन दिल्ली भ्रमण तथा विशेष पर्यटन स्थलों के भ्रमणार्थ बसों की व्यवस्था अपेक्षित शुल्क पर उपलब्ध होगी।

महासम्मेलन बैंक : सुरक्षा की दृष्टि से महासम्मेलन स्थल पर बैंक लॉकर की व्यवस्था रहेगी। आप अपनी नकदी एवं कीमती सामान जमा कर सकेंगे।

एटीम : चल एटीएम की सुविधा रहेगी। आवश्यकता होने पर आप पैसे निकाल सकेंगे।

कैन्टीन : महासम्मेलन में निशुल्क भोजन के अतिरिक्त कैन्टीन भी होगी जहां पर आगंतुक अपनी इच्छा एवं एवं स्वादानुसार स:शुल्क चाय, नाश्ता, स्नैक्स, लंच, डिनर आदि का आनन्द ले सकेंगे।

स्नान व शौचालय:- आगंतुकों के लिए स्नानागार एवं शौचालय की नि:शुल्क एवं सशुल्क दोनों व्यवस्थाएं उपलब्ध रहेंगी।

स्वच्छ पेय जल:- पेय जल की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ जल एटीएम, बोतलें एवं गिलास की सुविधा (न्यूनतम मूल्यों पर) उपलब्ध रहेंगी।

चिकित्सा सुविधा : महासम्मेलन स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा एवं आपातकालीन व्यवस्था रहेगी। 24 घण्टे एम्बूलेंस की व्यवस्था भी रहेगी।

स्वास्थ्य जांच: सब संन्यासियों, विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं की नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच।

अमानती सामान घर : आर्यजनों को अपना अतिरिक्त सामान अपने साथ-साथ लिए न घूमना पड़े, इसके लिए महासम्मेलन स्थल पर ही अमानती सामान घर की सुविधा उपलब्ध होगी।

खोया-पाया विभाग : महासम्मेलन स्थल पर कोई सामान आपको पड़ा मिले तो उसे खोया-पाया विभाग में जमा कराकर आर्यत्व का परिचय देवें, जिससे वह सामान उचित व्यक्ति को प्राप्त हो सके।

स्मृति चित्र: अपना स्मृति फोटो खिंचवाकर उसे फोटो फ्रेम के साथ सशुल्क प्राप्त करें।

चार्जिंग स्टेशन: आर्यजनों की सुविधार्थ मोबाइल एवं लैपटॉप चार्ज करने के लिए नि:शुल्क व सुशुल्क सुविधा उपलब्ध रहेगी।

मोबाइल रीचार्ज- महासम्मेलन स्थल पर मोबाइल कम्पनियों के मोबाइल रिचार्ज की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

सी.सी.टी.वी.: सुरक्षा व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण महासम्मेलन स्थल तथा केस की गतिविधियों को रिकार्ड करने के लिए सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था की गई है।

साइबर कैफे : आगंतुकों के प्रयोगार्थ साइबर कैफे एवं फोटोकापी की सशुल्क सुविधा उपलब्ध रहेगी।

सीधा प्रसारण: अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उद्घाटन, समापन, आर्य वीर दल प्रदर्शन तथा सभी प्रमुख आयोजनों का सीधा प्रसारण आर्यसन्देश टीवी के साथ-साथ विभिन्न टी.वी चैनलों, महासम्मेलन वेबसाइट एवं सोशल मिडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर किया जाएगा।

व्हील चेयर : व्हील चेयर केवल धरोहर राशि पर उपलब्ध रहेगी।

छोटे बच्चों से सम्बन्धी सुविधाएं : छोटे बच्चों की हाथ गाड़ी (pram) केवल धरोहर राशि पर उपलब्ध रहेगी।

मातृ सुविधा गृह : 3 वर्ष तक के बालक के साथ माता के विश्राम तथा शिशु पालन सम्बन्धी सुविधाओं के साथ नि:शुल्क हाल की व्यवस्था होगी।

बच्चों का कोना: 6 से 12 वर्ष तक के बच्चों के मनोरंजन, खेलकूद, फिल्म दिखाने की पूरी सुविधा होगी।

महासम्मेलन स्मृति चिन्हों की नीलामी: महासम्मेलन समापन के पश्चात् महासम्मेलन में सज्जा हेतु बनवाई गई सुंदर वस्तुओं को स्मृति चिन्ह के रूप में घर ले जाने हेतु उनकी नीलामी की जायेगी। नीलामी हेतु वस्तुओं की सूची फोटो सहित वेबसाइट पर 29 अक्तूबर 2025 से उपलब्ध रहेगी।

विशाल आर्य वीर दल सेवा शिविर : महासम्मेलन में विभिन्न व्यवस्था कार्यों को सम्भालने वाले हजारों आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं हेतु महासम्मेलन परिसर में विशाल आर्य वीर दल सेवा शिविर आयोजित किया जायेगा।

संन्यास एवं वानप्रस्थ दीक्षा : संन्यास एवं वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्रदान करने के लिए महासम्मेलन में विशेष सुविधाएं रहेगी।

वैदिक संस्कार : महासम्मेलन स्थल पर विशेष यज्ञ शाला में विभिन्न वैदिक संस्कार कराने हेतु सुंदर व्यवस्था रहेगी।

सोशल मीडिया कार्य प्रशिक्षण: महासम्मेलन में सोशल मीडिया पर कार्य करने हेतु विशेष प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाएगी।

यज्ञ प्रशिक्षण कक्षा: यज्ञ करने की सही विधि का प्रशिक्षण देने हेतु विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा।

प्रतिनिधित्व : भारत के लगभग सभी राज्यों के साथ-साथ विश्व के लगभग 40 से अधिक देशों के आर्यजनों का इस महासम्मेलन में प्रतिनिधित्व होने का अनुमान है।

विशेष निवेदन

महासम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने पधारने की पूर्व सूचना (आवास, भोजन एवं परिवहन की व्यवस्था में सुविधा की दृष्टि से) यथाशीघ्र अवश्य भेजें ताकि तदनुरूप व्यवस्थाएं बनाई जा सकें। महासम्मेलन सम्बन्धी विस्तृत जानकारियाँ एवं अग्रिम पंजीकरण की सुविधा महासम्मेलन की वेबसाइट www.aryamahasammelan.com पर उपलब्ध है।

हमारा प्रयास है कि हम समस्त श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा एवं वातारण दे पाएं, जिससे कि वे सब तरफ से ध्यान हटाकर महासम्मेलन में विद्वान वक्ताओं द्वारा दिए जाने वाले उद्बोधनों का ध्यानपूर्वक श्रवण-मनन करके अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर उसकी भावना और उन्हीं विचारों को प्रतिपादित कर सकें।

इस महासम्मेलन का उद्देश्य आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बनाना, सभी आर्यजनों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागृत करना तथा वर्तमान की सभी ज्वलन्त समस्याओं पर आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्धारण करना है, जिसमें आप सभी की सक्रिय सहभागिता अपेक्षित है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि महासम्मेलन को व्यवस्थित, सुन्दर एवं सफल बनाने में हमें आपका पूर्ण सहयोग, सद्भाव अवश्य ही प्राप्त होगा, जिससे हम और आप मिलकर इस महासम्मेलन को एक यादगार, प्रेरक एवं उर्जावान स्मृति बना सकेंगे।

सुविधा की दृष्टि से आगन्तुक आर्यबन्धु (ग्रुप) में अपना पंजीकरण पहले ही करा लेंगे या विवरण भेज देंगे तो उन्हें पहचान पत्र तैयार मिल जाएंगे।

महासम्मेलन की व्यवस्थाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। कृपया अपनी सहयोग राशि **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम **"संयोजक, आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001"** के पते पर भेजें। अथवा सीधे निम्नांकित बैंक खाते में जमा करें या स्कैन कोड के माध्यम से प्रदान करें। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट 9540040388 पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

सभा को दिया गया दान आयकर धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा | ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

समस्त सुधी पाठकों, आर्यजनों, आर्यसमाज, आर्यसंस्थाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के समस्त अधिकारियों, सदस्यों, आचार्यों एवं विद्यार्थियों से निवेदन है कि अपने मोबाइल कैमरे से इस पृष्ठ की फोटो खींचकर विभिन्न माध्यमों व्हाट्एप्प, टेलिग्राम, ट्वीटर, फेसबुक आदि माध्यमों से जन-साधारण में प्रचारित-प्रसारित करके अधिकाधिक संख्या में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के अवसर पर पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय एवं विभिन्न वैदिक विद्वानों, संन्यासीवृन्दों एवं भजनोपदेशकों के भजन-प्रवचन एवं आशीर्वाद का लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। - संयोजक

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वमन्तव्य-व्यामन्तव्य प्रकाश

गतांक से आगे-

31. जो सांगोपांग वेद-विद्याओं का अध्यापक सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे, वह 'आचार्य' कहाता है।

32. '**शिष्य**' उसको कहते हैं कि जो सत्यशिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य, धर्मात्मा, विद्याग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करनेवाला है।

33. '**गुरु**' माता-पिता और जो सत्य को ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे, वह भी 'गुरु' कहाता है।

34. '**पुरोहित**' जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा होवे।

35. '**उपाध्याय**' जो वेदों का एकदेश वा अंगों को पढ़ाता हो।

36. '**शिष्टाचार**' जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है, यही शिष्टाचार है और जो इसको करता है, वह 'शिष्ट' कहाता है।

37. प्रत्यक्षादि आठ '**प्रमाणों**' को भी मानता हूं।

38. '**आप्त**' जो यथार्थवक्ता, धर्मात्मा, सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है, उसी को 'आप्त' कहता हूं।

39. '**परीक्षा**' पांच प्रकार की है। इसमें से प्रथम जो ईश्वर उसके गुण-कर्म-स्वभाव और वेदविद्या, दूसरी प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टिक्रम,, चौथी आप्तों का व्यवहार और पांचवीं अपने आत्मा की पवित्रता विद्या इन पांच परीक्षाओं से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना चाहिए।

40. '**परोपकार**' जिससे सब मनुष्यों के दुराचार दु:ख छूटें, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़े, उसके करने को परोपकार कहता हूं।

41. '**स्वतन्त्र**'-'**परतन्त्र**' जीव अपने कामों में स्वतन्त्र और कर्मफल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र, वैसे ही ईश्वर अपने सत्याचार आदि काम करने में स्वतन्त्र है।

-**क्रमशः**

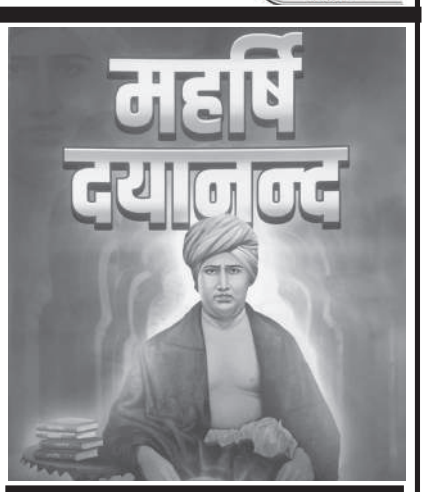

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Greatness Of Swami Dayanand

1. The first is God, Who is rememberd by so many names like Brahma, Paramatmaadi, Who has sign of Sachchidanandaadi, Whose qualities, actions, nature are pure, Who is omniscient, formless, omnipresent, unborn, eternal, omnipotent, merciful, just, the creator caretaker and destroyed, who is Karamfaldata for all living beings according to their deeds with true justice etc., I consider him as God.

2.I consider all the four Vedas (Vidya Dharmayukta Ishwarpraneet Sanhita Mantra-Part) as self-evident without delusion. They themselves are the proof that no other scripture is expected to be the proof. Just as the sun and the light are the illuminators of their own form and also the illuminators of the earth, so are the four Vedas, and the Brahmins of the four Vedas, the six branches, the six Upangas, the four Upavedas and the 1127 (eleven hundred and twenty seven) branches ofVedas Books given by Brahmadi are self proved Praman i.e. according to the Vedas and I disapprove the words which are against the Vedas.

3.The practice of justice without partiality, which is not against the Vedas, truthfulness, etc., I consider are as 'Dharma', and the unjust practice with partiality, false speech, etc., which is against the Vedas, as it as 'Adharma'.

4. I consider ''Jeeva'' as the combination of desire, hatred, good, bad and knowledge etc., little knowledgeable and eternal

5. Jeeva and Ishvara are quite different in nature and valid and inseparable from all-pervading and identical, i.e. just as the embodied matter is and was never will be different from the sky.In the same way I considor get Jeeva as inseprable like father and son.

6. There are three 'eternal substances'. One God, second soul, third nature i.e. the cause of the world, these are also called eternal. Those who are eternal, their qualities, deeds, nature are also eternal.

7.The substances-qualities-actions that are eternal by the combination of flow, they do not remain eternal after separation, but power is eternal in them and there will be a combination again and the separation of these three from the flow is also eternal. I agree

8.When a harmonious combining of different substances, is change to many forms, it is known as 'Shrishti.'

9. 'The purpose of creation' is that in which God's creation-instrumental qualities, deeds, nature should be successful. Like someone asked someone what are the eyes for? He said - 'to see'. Similarly, the success of God's ability to create is in creation and also in enjoying the deeds of the living beings as they are.

10. 'Srishti needs', its creator is God as explained above. Because who as be the it does not have the ability to create the universe and to become the seed form in the inert matter itself, so it's there must be the 'creat also.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

पश्चिमी दिल्ली में आर्यसमाज ....

हुए आर्यजन भारत माता की जय, वंदे मातरम, अपने अमर शहीदों का जय-जयकार करते हुए उमंग, उत्साह और उल्लास से सराबोर होकर आगे बढ़ रहे थे।

तिरंगा यात्रा का शुभारंभ रमन विहार सोसायटी सेक्टर 11, द्वारका से प्रारंभ होकर आर्य समाज राजनगर पालम, मंगलापुरी होते हुए इंदिरा पार्क, आर्य समाज नांगल राया, आर्य समाज जनकपुरी डी ब्लॉक, आर्य समाज सागरपुर, आर्य समाज सी-3 जनकपुरी होते हुए आर्य समाज बी-1 जनकपुरी में यह भव्य यात्रा एक समारोह के रूप में संपन्न हुई । तिरंगा यात्रा का बीच-बीच में आर्य समाजों द्वारा फूलों की वर्षा करके, पीत वस्त्र पहनाकर तथा जलपान द्वारा स्वागत किया गया और सभी स्थानों पर लोगों ने तिरंगा यात्रा का खूब सम्मान किया। संकरी गलियों से गुजरते हुए इस यात्रा को देखने के लिए हजारों लोग अपनी छतों पर और गलियों में घरों से बाहर निकले और सभी ने भारत माता की जय, वंदे मातरम के नारे साथ में मिलकर लगाए। यात्रा के समापन अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी आयोजकों को बधाई दी तथा अपने संदेश में कहा की आर्य समाज की रग रग में राष्ट्रभक्ति है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से देश को आजादी मिली, अब उसको सुरक्षित रखने के लिए भी आर्य समाज योगदान के देने के लिए सदैव तैयार है। श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज के इतिहास का हवाला देते हुए कहा की महर्षि की प्रेरणा से हजारों नहीं लाखों राष्ट्रभक्तों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, श्री राकेश आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा की आर्य समाज एक राष्ट्रभक्तों का बृहद आंदोलन कारी संगठन है, आने वाले 30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक स्वर्ण जयंती पार्क रोहिणी में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में लाखों आर्यजनों के समूह को देखने और उनको सुनने के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली हो या देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा हो आर्य समाज सदैव आगे रहता है। इस तिरंगा यात्रा में दिल्ली पुलिस के दर्जनों कांस्टेबल एस. एच. ओ. श्री रमेश कुमार जी के नेतृत्व में आरंभ से समापन तक साथ रहे। पूरी तिरंगा यात्रा प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुई ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली - 2025 के अवसर पर गत सम्मेलनों की भांति वानप्रस्थ और संन्यास ग्रहण करने के लिए वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगाख जो आर्य महानुभाव इस ऐतिहासिक अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण 'संयोजक, यज्ञ समिति' के नाम सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 के पते पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके। महासम्मेलन आयोजन समिति इस कार्यक्रम को विशेष प्रकार से आयोजित करेगी।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। ***ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति***

पृष्ठ 2 का शेष

राष्ट्र की स्वाधीनता और स्वधर्म के ......

कोल्हापुर नरेश छत्रपति शाहूजी महाराजादि स्वामी जी के कार्यों को प्रत्यक्ष वृति में लाने वाले थे। इस तरह उक्त महाराजाओं के द्वारा स्वामी जी ने स्वराज्य सम्बन्धि विचारों की चिंगारी पूरे देश में चेताने का कार्य किया। वे कहते हैं-"जब से विदेशी इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए तब से क्रमश: आर्यों का दु:ख बढ़ता ही जाता है। " सत्यार्थ प्रकाश में आप लिखते हैं- "कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरी उत्तम होता है।. पक्षपात् शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशी राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।" इस तरह जब स्वराज्य और स्वदेशी का अभिप्राय भी कोई नहीं जानता था उस काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश की स्वतन्त्रता की ज्योति प्रज्वलित की थी।

सन् 1877 में जब सभी नरेशों ने दिल्ली दरबार का आयोजन किया था। उस समय इन्दौर और अन्य रियासतों के महाराजाओं ने स्वामी दयानन्द जी को निमन्त्रण देकर वहां बुलाया तथा सभी राजाओं के सामने क्षात्रधर्म पर उपदेश देने के लिए विनम्र आग्रह किया था। स्वामी जी ने इस अवसर पर सभी राजाओं से राष्ट्रवाद तथा भारतीय स्वराज्य के विषय में विस्तार से चर्चा की थी, तथा दिल्ली दरबार के सम्पन्न होने के पश्चात् अनेक राजाओं से सम्पर्क बनाये रखने का कार्य प्रारम्भ किया। यह बात जब अंग्रेजों को पता चली तो उन्होंने भारतीय नरेशों को स्वामी जी से संपर्क बनाने में अनेक बाधाएं उपस्थित की।

शाहपुरा के महाराजा सर नाहर सिंह स्वामी दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने स्वामी जी के आदेश द्वारा अपने राजमहल में नित्य यज्ञादि करने का व्रत लिया था और वे उसे अखण्ड रूप से करते थे, उन्होंने अपने राज्य में स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित प्रजातन्त्र की प्रणाली लागू की और जब भारत स्वतन्त्र होने की बात आयी तब उन्होंने एक विशाल समारोह का आयोजन कर तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की योजनानुसार अपनी रियासत को बिना मुआवजे के भारत में शामिल करने की स्वीकृति दे दी। इसके पीछे स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद स्वातन्त्रयवाद की ही प्रेरणा थी। महाराजा फतह सिंह जो महाराजा सज्जन सिंह के उत्तराधिकारी थे और स्वामी जी के अनुयायियों में से एक थे, उनके विचारों की परम्परा उनमें महाराजा सज्जन सिंह उत्तराधिकारी के रूप में आयी थी। अपने शासन काल में भारत की स्वतन्त्रता के लिए सशस्त्र क्रान्ति करने वाले नौजवानों को अपने राज्य में गुप्त रूप से आश्रय देने की व्यवस्था भी की थी तथा उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने हेतु हर प्रकार से सहायता भी दी थी। अत: महाराजा फतह सिह अंग्रेजों की आंखों का कांटा बन चुके थे। उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये, पर उन्होंने सशस्त्र क्रान्तिकारियों के कार्यों से कभी मुंह नहीं मोड़ा। छत्रपति शाहूजी महाराज जो कोल्हापुर के महाराजा थे, उन्होंने अपने राज्य में भी आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत सारे कार्य किये। उन्होंने परिवारों के लिए यह आदेश निकाला था कि वे अपने यहां सत्यार्थ प्रकाश रखे तथा इसका प्रचार करें।

अत: यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय स्वराज्य की स्थापना के पीछे स्वामी दयानन्द की राष्ट्रवादी एवं प्रजातन्त्रवादी विचारधारा ही कार्य कर रही थी। राजस्थान के महाराजा जो भोग-विलासिता में डूबे हुए थे उनको प्रचीन सांस्कृतिक विरासत की महता को दर्शाकर उनमें राष्ट्रभक्ति और स्वातन्त्रय प्रेम की भावना जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। उनके इसी कार्य से भारतीय जनमानस सन् 1947 तक आन्दोलित होता रहा। चाहे वह शान्ति अथवा क्रान्ति के मार्ग से ही क्यों न हुआ हो। स्वामी जी ही नौजवानों को स्वतन्त्रता के लिए अन्त तक प्रेरित करते रहे हैं।

-संपादक

ओ३म्

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष — महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

स्वर्ण जयंती पार्क, सैक्टर 10, रोहिणी, नई दिल्ली 110085

पंजीकरण प्रारंभ

वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें

www.aryamahasammelan.com

पंजीकरण हेतु उपयोगी निर्देश

जत्था (Group) बनाऐं
परिवहन के साधन, आगमन प्रस्थान के समय, आवास चयन, संस्था आदि के आधार पर प्रतिभागियों के अलग-अलग जत्थे बनाएं।

जत्था नायक (Group Leader)
बेहतर प्रबंध हेतु छोटे-छोटे जत्थे बनाएँ (जैसे 25 सदस्य) और प्रत्येक जत्थे का जत्था नायक चुनें।

जत्थे के सदस्यों का पंजीकरण
एक-एक करके जत्थे के सभी सदस्यों का पंजीकरण करें। सभी का अलग- अलग मोबाईल नंबर देंगे तो बेहतर रहेगा।

आवास
प्रत्येक जत्थे की आवश्यकता अनुसार नि:शुल्क अथवा सशुल्क आवास चुनें। अपने आवास की व्यवस्था स्वयं भी कर सकते हैं।

आगमन / प्रस्थान
प्रत्येक जत्थे के परिवहन के साधन, आगमन / प्रस्थान के समय और स्थान की सूचना देवें। यह जानकारी टिकट बुक होने के बाद भी दे सकते हैं।

पंजीकरण संख्या
सफल पंजीकरण के बाद प्रत्येक सदस्य की पंजीकरण संख्या उसके मोबाईल नंबर पर भेज दी जाएगी।

कृपया 30 सितम्बर 2025 तक सभी जानकारी अवश्य डाल देवें ताकि हम आपको अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कर सकें

पंजीकरण में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए 93 1172 1172 पर संपर्क करें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, संस्थाओं/आर्य समाजों/पारिवारों से विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मारिका के लिए समस्त आर्यजनों, संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित किए जाते हैं। यदि आप अपना कोई शुभकामना सन्देश विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्य समाज की जानकारी अथवा अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी का परिचय या अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं।

विज्ञापन प्रकाशित कराने या अधिक जानकारी के लिए '**स्मारिका संयोजक**', 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को लिखें/9311721172 पर सम्पर्क करें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - **संयोजक**

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025
स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

पुस्तक विक्रेता स्टाल बुक कराएं

महासम्मेलन स्थल पर वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य प्रचार स्टाल लगाए जाएंगे। इन स्टॉलों पर केवल वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री, यज्ञ सम्बन्धित सामग्री आदि ही विक्रय की जा सकेगी। स्टालों की संख्या सीमित रहेगी, जोकि पहले आओ-पहले पाओ के आधर पर दिए जाएंगे। स्टाल बुकिंग शुल्क 5000/- रुपये निश्चित किया गया है, जिसका भुगतान नगद/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट अथवा RTGS/NEFT के माध्यम से निम्नांकित बैंक खाते या दिए गए स्कैन कोड द्वारा कर सकते हैं। चैक वापिस होने पर 500/- अतिरिक्त देना होगा तथा स्टॉल रद्द हो जायेगा।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

स्टाल बुकिंग करवाने अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए **संयोजक (स्टाल) श्री संजीव आर्य जी (9868244958)** से सम्पर्क करें। - ***संयोजक***

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सफल एवं प्रेरणाप्रद बनाने हेतु सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अत: आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव **31 अगस्त 2025** तक भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001, मो. 9311721172
Email:aryasabha@yahoo.com

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 11 अगस्त, 2025 से रविवार 17 अगस्त, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 14-15-16/08/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 अगस्त, 2025

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

समय दानी आर्यजन कृपया ध्यान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 के आयोजन 30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 की आयोजन तथा आयोजन से पूर्व तथा पश्चात् की व्यवस्थाओं तथा उसके लिए गठित होने वाली विभिन्न समितियों में सहयोग करने के लिए सभी आर्यजनों एवं कार्यकर्ताओं से समय दान करने का निवेदन किया जाता है। अत: जो आर्यजन **कम से कम 7 दिन का समय** सम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोगी बनने के लिए दान करना चाहें, वे कृपया अपना नाम, मो.न. एंव विवरण तथा किन तिथियों में समय में कब से कब तक का समय दान कर सकते हैं **9311721172** पर नोट करा दें। हमारे कार्यकर्ता शीघ्र ही आपसे सम्पर्क स्थापित करेंगे। *- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति*

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवदेन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों -ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन, दिल्ली- 2025'** के अवसर पर प्रकाशित होने वाली **भव्य स्मारिका हेतु** वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनुछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए-4 पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 **Email:aryasabha@yahoo.com**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह